# कुंभपर्वकी महिमा

## अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र [मुद्दे] '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)


**१. कुंभमेलेसे संबंधित विभिन्न संज्ञाओंका अर्थ** ६

* 'कुंभ' * कुंभपर्व * कुंभमेला ६

**२. ग्रहगणितके अनुसार चार कुंभक्षेत्रोंमें होनेवाले कुंभमेले** ७

**३. कुंभपर्वक्षेत्र एवं उनका माहात्म्य** १०

* प्रयाग (इलाहाबाद) * हरद्वार (हरिद्वार) १०

* उज्जैन * त्र्यंबकेश्वर एवं नासिक १७

**४. कुंभमेलेका धार्मिक महत्त्व** २३

**५. कुंभमेलेकी विशेषताएं** २४

**६. कुंभमेलेमें सहभागी होनेवाले विभिन्न अखाडे !** ३१

**७. श्रद्धालुओ, कुंभक्षेत्रकी पवित्रता बनाए रखनेका प्रयास करें !** ३४

**८. श्रद्धालुओ, कुंभक्षेत्रकी दुष्प्रवृत्तियां रोकना, धर्मपालन ही !** ३९

**९. कुंभक्षेत्रके हिंदू व्यापारियो, यात्रियोंसे उचित व्यवहार करो !** ४३

**१०. कुंभमेलेके मूल प्रयोजनका ध्यान रखें !** ४४


## भूमिका

कुंभमेला विश्वका सबसे बडा धार्मिक पर्व है ! कुंभमेला भारतकी सांस्कृतिक महानताका केवल दर्शन ही नहीं, अपितु संतसंग प्रदान करनेवाला आध्यात्मिक सम्मेलन है । कुंभपर्वके उपलक्ष्यमें प्रयाग, हरद्वार (हरिद्वार), उज्जैन एवं त्र्यंबकेश्वर-नासिक, इन चार क्षेत्रोंमें प्रति १२ वर्ष संपन्न होनेवाले इस पर्वका हिंदू जीवनदर्शनमें महत्त्वपूर्ण स्थान है । कुंभमेलेकी आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक महिमा अनन्य है । गुरुको राशिचक्र भोगनेमें १२ वर्षकी कालावधि लगती है, जिससे प्रत्येक १२ वर्षोंके उपरांत कुंभयोग आता है । हिंदू धर्मकी दृष्टिसे तीन बडे पर्व महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं - गुरुके कन्या राशिमें होते हुए 'कन्यागत', सिंह राशिमें होनेपर 'सिंहस्थ' एवं कुंभ राशिमें होनेपर

'कुंभमेला' । गंगास्नान, साधना, दानधर्म, पितृतर्पण, श्राद्धविधि, संतदर्शन, धर्मचर्चा जैसे धार्मिक कृत्य करनेके लिए करोडों श्रद्धालु यहांपर आते हैं । यह श्रद्धालुओंका पर्व ही है । साथ ही, देवता, ऋषि, संत एवं तैंतीस करोड तीर्थ भी कुंभपर्वमें सम्मिलित होते हैं, जो एक अद्वितीय घटना है । 'हिंदू-एकता' कुंभमेलेकी घोषणा है । कुंभमेला हिंदुओंके धार्मिक तथा सांस्कृतिक अमरत्वका सूचक है । विदेशी नागरिकोंको, यह मेला हिंदू धर्मके अंतरंगका दर्शन कराता है । वास्तविक अर्थमें इस पर्वका आध्यात्मिक लाभ, कुंभमेलेमें धर्मश्रद्धायुक्त आचरण करनेवाले श्रद्धालुओंको ही होता है । हिंदू धर्मको निश्चित ही पुनर्वैभव प्राप्त होगा; यदि साधु-संत, संप्रदाय एवं हिंदू संगठन; कुंभमेलेके मूल प्रयोजनको ध्यानमें रखते हुए धर्मशिक्षा, धर्मप्रबोधन, धर्मरक्षा एवं हिंदूसंगठन, इनकी चतुःसूत्रीको लेकर निरंतर कार्य करते रहेंगे ।

अतएव इस ग्रंथमें मुख्यरूपसे कुंभमेलेकी महिमा, कुंभक्षेत्रमें अपेक्षित आचरण एवं कुंभमेलेके मूल प्रयोजनके विषयमें विवेचन किया है । यह ग्रंथ पढकर समस्त हिंदू कुंभमेलेके महत्त्व को अध्यात्मशास्त्रीय दृष्टिकोणसे समझ लें, इस श्रेष्ठ पर्वके निमित्त साधु-संतोंके नेतृत्वमें 'हिंदू धर्मरक्षा एवं हिंदूसंगठन'के कार्यके लिए आगे बढें एवं यहांसे धर्मध्वजा संपूर्ण विश्वमें फहरानेकी प्रेरणा लेकर ही जाएं, कुंभपर्वस्थित देवताओंके चरणोंमें यही प्रार्थना है ! **- संकलनकर्ता**